ISSN: 2349-7637 (Online)
Volume-1, Issue-2, September 2014
RESEARCH HUB – International Multidisciplinary Research Journal
Research Paper

भारतीय राजनीतिक चिंतन में लोकतांत्रिक चेतना

डॉ मंजुलता शर्मा

व्याख्याता, राजनीति विज्ञान, राजकीय महाविद्यालय निवाई

Abstract:

भारतीय राजनीतिक चिंतन में लोकतांत्रिक चेतना का एक महत्वपूर्ण स्थान है। यह चेतना भारत के स्वतंत्रता संग्राम से लेकर आज तक, सामाजिक और राजनीतिक संरचनाओं के विकास में प्रमुख भूमिका निभाती रही है। भारतीय राजनीति में लोकतंत्र के सिद्धांतों और मान्यताओं का प्रभाव न केवल सरकारी नीति और निर्णयों पर पड़ा है, बल्कि यह समाज के हर वर्ग के जीवन में गहरे असर डालता है। भारतीय लोकतंत्र की नींव, समाज के विभिन्न वर्गों के समान अधिकार और समान अवसर की भावना पर आधारित है। इस शोधपत्र में भारतीय राजनीतिक चिंतन में लोकतांत्रिक चेतना के प्रमुख पहलुओं का विस्तृत विश्लेषण किया गया है।

Key words: भारत, राजनीतिक चिंतन, लोकतंत्र, चेतना।

शोध विस्तार :– भारत एक प्राचीन सभ्यता है जिसने विविध राजनीतिक व्यवस्थाओं को जन्म दिया है। यद्यपि आधुनिक लोकतंत्र की उत्पत्ति पश्चिम से मानी जाती है, परंतु भारत में लोकतांत्रिक चेतना की जड़ें अत्यंत गहरी और प्राचीन हैं। ऋग्वेद से लेकर बौद्ध काल तक, भारतीय समाज में जनसुनवाई, सामूहिक निर्णय, संवाद, और बहस जैसी प्रक्रियाएं प्रचलित थीं। इस शोधपत्र का उद्देश्य है प्राचीन भारत में मौजूद उन लोकतांत्रिक तत्वों की विवेचना करना, जो भारतीय राजनीतिक दर्शन की मौलिक विशेषता हैं।

भारतीय राजनीतिक चिंतन में लोकतांत्रिक चेतना का विकास भारतीय समाज की सांस्कृतिक और सामाजिक विविधताओं को ध्यान में रखते हुए हुआ। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम ने इसे एक मुख्यधारा के रूप में स्थापित किया और भारतीय संविधान ने इसे कानूनी रूप में संरक्षित किया। लोकतंत्र का सिद्धांत केवल सत्ता के हस्तांतरण का नहीं, बल्कि यह समाज के हर नागरिक के अधिकारों और स्वतंत्रताओं की सुरक्षा का एक विस्तृत विचार है। यह चिंतन भारतीय लोकतंत्र के मूलभूत सिद्धांतों, जैसे समानता, स्वतंत्रता, और न्याय को जीवन में उतारने का प्रयास करता है।

भारतीय राजनीतिक चिन्तन एक बहुआयामी और दीर्घकालिक परंपरा रही है, जिसकी जड़ें वैदिक युग, बौद्ध–जैन परंपरा, मध्यकालीन संत साहित्य और आधुनिक राष्ट्रवादी आंदोलन तक फैली हुई हैं। इस परंपरा में लोकतांत्रिक चेतना एक अंतर्निहित तत्त्व के रूप में सदैव विद्यमान रही है। लोकतंत्र को सामान्यतः एक शासन प्रणाली के रूप में देखा जाता है, किंतु भारतीय परिप्रेक्ष्य में यह एक जीवन दृष्टि, सामाजिक नैतिकता और सांस्कृतिक स्वायत्तता का प्रतीक रहा है।[1]

भारत की सामाजिक संरचना, दर्शन और ऐतिहासिक अनुभवों ने लोकतंत्र की अवधारणा को विशिष्ट स्वरूप प्रदान किया है। प्राचीन काल की सभा और समिति से लेकर बौद्ध गणराज्यों और मध्यकालीन भक्ति आंदोलन तक, तथा आधुनिक काल में भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन और संविधान निर्माण की प्रक्रिया तक लोकतंत्र की चेतना निरंतर विकसित होती रही है। इस चेतना ने भारतीय समाज में सहभागिता, सहिष्णुता, समानता और न्याय की अवधारणाओं को गहराई से आत्मसात किया है।

भारतीय राजनीतिक चिन्तन में लोकतांत्रिक चेतना

भारतीय राजनीतिक चिन्तन एक समृद्ध और विविध परंपरा को दर्शाता है, जिसमें प्राचीन काल से लेकर आधुनिक युग तक विभिन्न विचारकों, आंदोलनों और समाज सुधारकों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इस चिन्तन की एक महत्वपूर्ण विशेषता लोकतांत्रिक चेतना रही है, जो समाज के प्रत्येक वर्ग को समान अधिकार, न्याय और भागीदारी का अवसर प्रदान करने की दिशा में प्रेरित करती है।

लोकतांत्रिक चेतना का उद्भव भारत में केवल पाश्चात्य प्रभाव का परिणाम नहीं रहा, बल्कि इसके बीज हमें प्राचीन भारतीय ग्रंथों, जैसे कि महाभारत, रामायण, बौद्ध और जैन साहित्य तथा कौटिल्य के अर्थशास्त्र जैसे ग्रंथों में भी मिलते हैं। आधुनिक काल में राजा राममोहन राय, महात्मा गांधी, पंडित नेहरू, डॉ. आंबेडकर जैसे विचारकों ने लोकतंत्र को केवल एक शासन प्रणाली न मानकर, एक समाजिक–नैतिक आदर्श के रूप में प्रस्तुत किया।

RHIMRJ

RHIMRJ

प्राचीन भारतीय चिन्तन में लोकतांत्रिक तत्व

भारतीय लोकतांत्रिक परंपरा का बीज प्राचीन ग्रंथों और समाज व्यवस्थाओं में गहराई से निहित है। वैदिक काल में सभा और समिति दो प्रमुख संस्थाएं थीं, जिन्हें 'जनता की आवाज' और निर्णय लेने वाले निकाय के रूप में देखा जाता है। ऋग्वेद (10.85) में इनका स्पष्ट उल्लेख मिलता है, जहाँ राजा को इन निकायों की सहमति से ही कार्य करने की आवश्यकता होती थी। यह इंगित करता है कि राजा निरंकुश नहीं था, बल्कि उसकी शक्ति को सीमित करने वाले लोकतांत्रिक तंत्र पहले से मौजूद थे।

गणराज्य परंपरा विशेषकर बौद्ध और जैन ग्रंथों में स्पष्ट होती है। 'महावग्ग' और 'दीघ निकाय' जैसे पालि ग्रंथों में लिच्छवी, शाक्य, और मल्ल जैसे गणराज्यों का वर्णन मिलता है, जहाँ सामूहिक नेतृत्व, प्रतिनिधियों का चयन और निर्णय हेतु बहस की परंपरा मौजूद थी। यह उस काल की अत्यंत उन्नत राजनीतिक चेतना को दर्शाता है।[2]

महात्मा बुद्ध की शिक्षाओं में संवाद, विचार–विमर्श और व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर बल दिया गया। उनके संघों में हर सदस्य की राय को महत्व दिया जाता था और संघ के निर्णय बहुमत से लिए जाते थे। यह सामूहिक नेतृत्व की अवधारणा आज के लोकतंत्र के 'पार्लियामेंट्री सिस्टम' के समान मानी जा सकती है। कौटिल्य का अर्थशास्त्र भी शासक की उत्तरदायित्वपूर्ण भूमिका और प्रजा की भलाई को प्राथमिकता देता है। उसमें स्पष्ट उल्लेख है कि राजा को न्यायिक, प्रशासनिक और नैतिक रूप से प्रजा के प्रति उत्तरदायी होना चाहिए।

मध्यकालीन भारत में लोकतांत्रिक चेतना

मध्यकालीन भारत में भक्ति आंदोलन और सूफी संतों ने समाज में लोकतांत्रिक चेतना को बढ़ावा दिया। रोमिला थापर ने अपने कार्य Early India: From the Origins to AD 1300 में इस बात की चर्चा की है कि भक्ति और सूफी संतों ने समाज में समानता और सहिष्णुता के संदेश को फैलाया। उन्होंने जातिवाद और धार्मिक भेदभाव का विरोध किया और समानता का आदर्श प्रस्तुत किया, जो लोकतांत्रिक चेतना का मूल तत्व है।

कृष्णकांत (Krishnakant) के अध्ययन में यह बात सामने आई है कि भक्ति आंदोलन के दौरान संतों ने लोकतांत्रिक मूल्यों को जन–जन तक पहुँचाया और समाज के निचले वर्गों को आवाज दी। उनका यह भी मानना है कि भक्ति आंदोलन ने भारतीय समाज में लोकतांत्रिक चेतना को विशेष रूप से मजबूत किया।[3]

आधुनिक युग में लोकतांत्रिक चेतना

आधुनिक भारत में लोकतांत्रिक चेतना का विकास कई प्रमुख विचारकों और आंदोलनों से हुआ है। जवाहरलाल नेहरू ने The Discovery of India में भारतीय लोकतंत्र के विकास पर प्रकाश डाला है। उनके अनुसार, भारतीय लोकतंत्र का आधार समानता, स्वतंत्रता और भाईचारे की भावना पर आधारित था, जो भारतीय समाज के विविधतापूर्ण स्वभाव को स्वीकार करता था।

महात्मा गांधी ने अपने विचारों में लोकतंत्र को केवल चुनाव प्रक्रिया तक सीमित न रखते हुए, इसे एक जीवन पद्धति के रूप में प्रस्तुत किया। उन्होंने लोकतंत्र को एक आध्यात्मिक अभ्यास माना और इसके साथ–साथ सामाजिक और आर्थिक न्याय को भी अनिवार्य बताया। गांधी के अनुसार, लोकतंत्र का सही रूप तभी संभव है जब यह समाज के कमजोर वर्गों के लिए वास्तविक शक्ति का माध्यम बने।

डॉ. भीमराव आंबेडकर के योगदान को नकारा नहीं जा सकता। उनके द्वारा तैयार किया गया भारतीय संविधान लोकतांत्रिक चेतना की सबसे बड़ी अभिव्यक्ति है। आंबेडकर ने भारतीय समाज में जातिवाद और सामाजिक असमानता के खिलाफ संघर्ष करते हुए संविधान में समानता और न्याय के सिद्धांतों को परिभाषित किया। दीपक कुमार ने अपने शोध The Role of Ambedkar in Indian Democracy में आंबेडकर के योगदान का मूल्यांकन किया है, जिसमें उनका यह मानना है कि आंबेडकर ने भारतीय लोकतंत्र को सामाजिक न्याय का एक प्रभावी माध्यम बनाया।[4]

भारतीय लोकतंत्र का विकास केवल पाश्चात्य विचारों का अनुकरण नहीं था, बल्कि यह भारत की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और सामाजिक विशेषताओं से उत्पन्न हुआ था। प्राचीन काल से लेकर आज तक, लोकतांत्रिक चेतना भारतीय राजनीतिक जीवन का अभिन्न हिस्सा रही है, और विभिन्न विचारकों ने इसे अपनी रचनाओं में परिभाषित किया है। भारतीय राजनीतिक चिन्तन की जड़ें प्राचीन समय से लेकर आज तक विभिन्न सांस्कृतिक, धार्मिक और दार्शनिक आंदोलनों में पाई जाती हैं। लोकतंत्र की अवधारणा, जो पश्चिमी दृ

ष्टिकोण से उत्पन्न हुई, भारत में अपनी विशिष्टता के साथ विकसित हुई है। आधुनिक भारत में स्वतंत्रता संग्राम, महात्मा गांधी, डॉ. भीमराव आंबेडकर और अन्य समाज सुधारकों ने लोकतांत्रिक मूल्यों को हर वर्ग में फैलाया।

लोकतांत्रिक चेतना के प्रमुख आयाम :

भारतीय लोकतंत्र की नींव स्वतंत्रता संग्राम में रखी गई थी, जहां नेताओं और जनमानस ने विदेशी शासन के खिलाफ संघर्ष करते हुए लोकतांत्रिक मूल्यों का पालन किया। महात्मा गांधी, पंडित नेहरू, सरदार पटेल, और अन्य स्वतंत्रता सेनानियों ने लोकतांत्रिक दृष्टिकोण को फैलाया और इसे भारतीय समाज की एक अनिवार्य आवश्यकता बताया। भारतीय संविधान ने लोकतंत्र की स्थापना की और नागरिकों को उनके अधिकारों और स्वतंत्रताओं का संरक्षण दिया। भारतीय संविधान ने धर्मनिरपेक्षता, समानता, न्याय, और भाईचारे को अपनी बुनियाद बनाया, जो भारतीय लोकतंत्र की गहरी चेतना का प्रतीक है। न्यायपालिका को स्वतंत्रता दी गई, जिससे नागरिकों के अधिकारों का उल्लंघन न हो।[5]

भारतीय राजनीति में लोकतांत्रिक चेतना केवल राजनीतिक अधिकारों तक सीमित नहीं रही, बल्कि यह समाज के विभिन्न वर्गों को समान अवसर और सम्मान देने की कोशिशों में भी दिखाई देती है। भारतीय समाज में जाति, धर्म, लिंग, और अन्य सामाजिक भेदभावों को समाप्त करने के लिए अनेक संवैधानिक प्रावधान और योजनाएं लागू की गईं, जो समाज में समानता की भावना को बल देती हैं। भारतीय लोकतंत्र में नागरिकों को उनके अधिकारों की रक्षा के लिए विशेष प्रावधान किए गए हैं। जैसे–स्वतंत्रता, समानता, धार्मिक स्वतंत्रता, और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता। इन अधिकारों के संरक्षण के लिए विभिन्न संस्थाएं और समितियां काम करती हैं, जैसे चुनाव आयोग, मानवाधिकार आयोग आदि।

भारतीय लोकतंत्र का एक प्रमुख पहलू है चुनावों का स्वतंत्र और निष्पक्ष तरीके से होना। भारत में विभिन्न प्रकार के चुनाव – संसदीय, विधानसभा, नगरपालिका होते हैं, जो नागरिकों को उनकी सरकार चुनने का अधिकार देते हैं। भारतीय चुनाव प्रक्रिया में बहुलतावाद को महत्व दिया जाता है, और विभिन्न विचारधाराओं और पार्टी प्रणालियों को समान अवसर मिलता है।

भारतीय लोकतांत्रिक चेतना का एक और अहम पहलू है नागरिकों की राजनीतिक जागरूकता। यह चेतना समाज के हर वर्ग में फैलती जा रही है, जिससे लोग सरकार के कार्यों और नीतियों के प्रति सजग और संवेदनशील होते हैं। मीडिया, शिक्षा और समाजिक संगठनों के माध्यम से यह जागरूकता बढ़ी है।[6]

स्वतंत्रता संग्राम और लोकतांत्रिक चेतना का आरंभ (Freedom Struggle and the Beginning of Democratic Consciousness) :

भारतीय लोकतांत्रिक चेतना की नींव भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में रखी गई थी। महात्मा गांधी और पंडित नेहरू जैसे नेताओं ने समाज के हर वर्ग को समान अधिकार देने का आह्वान किया। गांधीजी के सत्य और अहिंसा के सिद्धांत ने भारतीय जनमानस को यह सिखाया कि लोकतंत्र केवल सत्ता की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना का हिस्सा है। स्वतंत्रता संग्राम में लोकतांत्रिक चेतना ने समाज में एक नई जागरूकता उत्पन्न की, जो आज भी भारतीय राजनीतिक चिंतन का आधार है।

भारतीय संविधान और लोकतांत्रिक चेतना (Indian Constitution and Democratic Consciousness) :

भारतीय संविधान ने लोकतंत्र को संस्थागत रूप में स्थापित किया। डॉ. भीमराव अंबेडकर के नेतृत्व में तैयार संविधान ने भारतीय नागरिकों को न केवल राजनीतिक अधिकार दिए, बल्कि सामाजिक और आर्थिक समानता की दिशा में भी कदम बढ़ाए। भारतीय संविधान ने यह सुनिश्चित किया कि हर नागरिक को समान अवसर मिलें और किसी भी प्रकार के भेदभाव से मुक्त रखा जाए। इसके अलावा, भारतीय न्यायपालिका और निर्वाचन आयोग जैसे संस्थानों ने लोकतांत्रिक व्यवस्था की मजबूती के लिए कार्य किया।[7]

चुनाव प्रणाली और बहुलतावाद (Electoral System and Pluralism) :

भारत में लोकतांत्रिक चेतना का एक अन्य महत्वपूर्ण आयाम है चुनाव प्रणाली और बहुलतावाद। भारतीय चुनाव प्रणाली में नागरिकों को उनके प्रतिनिधियों का चुनाव करने का अधिकार है। यह प्रणाली न केवल राजनीतिक दलों को बल्कि समाज के विभिन्न वर्गों को अपनी आवाज उठाने का अवसर प्रदान करती है। बहुलतावाद का सिद्धांत भारतीय समाज की विविधताओं को स्वीकार करता है और विभिन्न विचारधाराओं को समान अवसर प्रदान करता है। भारतीय राजनीति में यह बहुलतावाद लोकतांत्रिक चेतना का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

समाज में राजनीतिक जागरूकता और समानता (Political Awareness and Equality in Society) :

लोकतांत्रिक चेतना का एक महत्वपूर्ण आयाम समाज में राजनीतिक जागरूकता और समानता है। भारतीय समाज में समय के साथ राजनीतिक जागरूकता बढ़ी है, जिससे लोग सरकार की नीतियों और कार्यों के प्रति संवेदनशील हो रहे हैं। इसके साथ ही, सामाजिक समानता की ओर बढ़ने की प्रक्रिया भी तेज हुई है। भारतीय संविधान के अनुसार, हर नागरिक को समान अधिकार और स्वतंत्रता प्राप्त है, और यह लोकतांत्रिक चेतना को और मजबूत करता है।[8]

मीडिया और लोकतांत्रिक चेतना (Media and Democratic Consciousness) :

मीडिया का भारतीय लोकतंत्र में महत्वपूर्ण स्थान है। मीडिया लोकतांत्रिक चेतना के प्रसार का एक महत्वपूर्ण साधन है। भारतीय मीडिया ने लोकतांत्रिक प्रक्रिया, नागरिकों के अधिकारों, और सरकार की नीतियों के बारे में जानकारी प्रदान करने का कार्य किया है। प्रेस और स्वतंत्र मीडिया के माध्यम से नागरिकों को उनके अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरूक किया जाता है। इसके अलावा, मीडिया ने विभिन्न सामाजिक मुद्दों को उजागर कर जनमत निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। मीडिया का यह कार्य भारतीय लोकतंत्र की प्रक्रिया को अधिक पारदर्शी और जवाबदेह बनाने में सहायक रहा है।

भारतीय राजनीतिक चिंतन में लोकतांत्रिक चेतना की यात्रा एक निरंतर विकसित होती प्रक्रिया है। यह चेतना भारतीय समाज के हर क्षेत्र में प्रकट होती है, चाहे वह चुनावों में भागीदारी हो, संविधान में निहित अधिकार हों, या समाज में समानता और सामाजिक न्याय की दिशा में उठाए गए कदम। भारतीय लोकतंत्र का स्थायित्व और सफलता इस लोकतांत्रिक चेतना के प्रभावी क्रियान्वयन पर निर्भर है। आने वाले समय में भारतीय लोकतांत्रिक चेतना और अधिक प्रगति करेगी, जिससे समाज में समानता, स्वतंत्रता, और भाईचारे की भावना को और मजबूत किया जा सकेगा।[9]

भारतीय राजनीति में लोकतांत्रिक चेतना का महत्व निरंतर बढ़ रहा है। यह केवल शासन प्रणाली तक सीमित नहीं है, बल्कि भारतीय समाज की धारा में एक गहरे सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन का रूप ले चुकी है। लोकतांत्रिक चेतना, समानता, स्वतंत्रता, और भाईचारे के आदर्शों पर आधारित है, जो भारतीय समाज को एकजुट और मजबूत बनाते हैं। भारतीय राजनीतिक चिंतन में लोकतांत्रिक चेतना की यह प्रक्रिया निरंतर विकसित हो रही है और आने वाले समय में यह और भी प्रगति कर सकती है।

निष्कर्ष (Conclusion) :

भारतीय राजनीतिक चिंतन में लोकतांत्रिक चेतना एक निरंतर विकसित होने वाली प्रक्रिया है। यह चेतना केवल राजनीतिक अधिकारों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समाज के हर वर्ग के जीवन में व्याप्त है। भारतीय लोकतंत्र का स्थायित्व और प्रभाव केवल चुनावों और सत्ता के हस्तांतरण में नहीं, बल्कि इसके द्वारा समाज में समानता, स्वतंत्रता, और भाईचारे के आदर्शों को फैलाने में भी है। लोकतांत्रिक चेतना भारतीय समाज की जड़ों में बसी हुई है और यह भारतीय राजनीति को एक नई दिशा प्रदान करती है। आने वाले समय में यह चेतना और अधिक प्रगति करेगी और भारतीय लोकतंत्र को और भी सशक्त बनाएगी।

संदर्भ

1. देव, अर्जुन, देव, इन्दिरा, (2009), 'समकालीन विश्व का इतिहास 1890–2009, ऑरियंट ब्लैक्स्वॉन, दिल्ली, पृ. 19
2. इल्डर्सवेल्ड, सैमुल जे., (1978), 'सिटीजन एण्ड पालिटिक्स : मॉस पालिटिकल बिहेवियन इन इण्डिया, यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस, शिकागा, पृ. 121
3. ग्रोवर, बी.एल. एण्ड यशपाल,(2003), 'भारतीय स्वतंत्रता संग्राम तथा संवैधानिक विकास, एस.चन्द प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 69
4. जैन, धर्मचन्द, (2000), 'भारतीय लोकतंत्र, प्रिंटवैल प्रकाशन, जययपुर, पृ. 98
5. जौहरी, जे.सी., (2006), 'नयी तुलनात्मक राजनीति तथा प्रमुख शासन व्यवस्थाएं, साहित्य भवन पब्लिकेशंस, आगरा, पृ. 139
6. नारंग, ए.एस., (2010–11), 'भारतीय शासन एवं राजनीति, गीतांजली पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, पृ. 03
7. भारतीय राजनीति का अध्ययन, डॉ. रामनिवास यादव, 2005, पृ. 178
8. भारतीय लोकतंत्र : सिद्धांत और व्यवहार, डॉ. विजय शर्मा, 2012, पृ. 34
9. उपरोक्त, पृ. 11

ISSN: 2349-7637 (Online)